मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MJY–001

स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)

(एम. ए. जे. वाई.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.जे.वाई.-001 : भारतीय ज्योतिष का परिचय एवं ऐतिहासिकता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र कुल दो खण्डों में विभक्त है।*

(ii) दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।

(iii) खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

निर्देश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिये। प्रत्येक के लिए 20 अंक निर्धारित हैं।* 3×20=60

1. संस्कृत वाङ्मय के स्वरूप पर सुविस्तृत प्रकाश डालिए।
2. ज्योतिषशास्त्र के उद्भव, विकास एवं प्रवर्तक आचार्यों पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत कीजिए।
3. समाज में ज्योतिष की उपयोगिता सिद्ध करते हुए विभिन्न समस्याओं के निदान में ज्योतिष की भूमिका बताइये।
4. 'बहुस्कन्धात्मक ज्योतिष' विषय पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत करते हुए स्कन्धों का पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।
5. सृष्टि-उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्तों की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।
6. दिक् एवं देश की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके प्रभेदों पर चर्चा प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड—ख

निर्देश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।* 4×10=40

1. ज्योतिष की परिभाषा व स्वरूप बताते हुए इसकी उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।

2. शिक्षा एवं ज्योतिष के अन्त:सम्बन्ध पर चर्चा करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

3. सिद्धान्त ज्योतिष स्कन्ध का परिचय, स्वरूप एवं मुख्य आचार्यों का वर्णन कीजिए।

4. सृष्टि–उत्पत्ति के पाश्चात्य सिद्धान्तों पर विमर्श प्रस्तुत कीजिए।

5. काल की अवधारणा एवं प्रभेदों पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

6. प्रलय की अवधारणा एवं उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।

7. होरा स्कन्ध का परिचय देते हुए उसकी अवधारणा व स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

8. ज्योतिष की वेदाङ्गता पर चर्चा प्रस्तुत कीजिए।

× × × × ×